विश्वास और श्रद्धा

कानून को सच्चा मान लेना विश्वास है और सच्चा समझ कर उससे गहरा ताल्लुक (सम्बन्ध) पैदा कर लेना और वैसा ही बन जाना श्रद्धा है. कानून जो कुछ कहता है उसमें हमारी बेहतरी है. जितने भी प्राकृतिक नियम हैं, वे सब हमारी समृद्धि के लिए ही हैं. उनमें लग़्ज़िश (लाग लपेट) और कमी नाम को भी नहीं है. किसी भी कानून को ले लो और उस पर विचार करो. वह हमेशा से एक ही हालत पर क़ायम रहेगा. उसमें कभी फ़रक़ नहीं आता. न किसी के साथ रियायत है और न ज़्यादती. हमेशा एकरस, सबके साथ एक जैसा. क्या तुमने सूरज को कभी पश्चिम से निकलते देखा है? क्या मौसम की चाल में फ़र्क़ आया है? क्या कभी जानवर के आदमी और आदमी के जानवर पैदा हुए हैं? और क्या चौपायों को आसमान में उड़ते देखा है? गरज़ है कि कहाँ तक गिनवाया जाय. जहाँ पर हर चीज़ एक उसूल के मातहत काम कर रही है ओर हमेशा करती रहेगी, जब हर कानून ऐसा अटल है और उसमें तबदीली नाम को भी नहीं है, तो कानून को बनाने वाला और उसको क़ायदे में रखने वाला ज़रूर कोई है. यह एक ऐसी बात है जिसको बेवकूफ भी जानता है और समझता है. लेकिन अगर किसी ने आँख बंद कर रखी है और चिल्ला रहा है कि मुझको दिखाई नहीं देता, तो इसमें सूरज का क्या दोष है? आँख इस वास्ते दी गयी है कि उससे देखो-भालो. मन इसी वास्ते दिया गया है कि उससे सोचो और विचारो. अक्ल इसी वास्ते दी गयी है कि उससे नतीजे पर पहुंचो. इस ताक़त को तुम कोई नाम दो, इसकी कोई शक्ल क़ायम करो, यह तुम्हारी अपनी समझ पर मौक़ूफ़ (निर्भर) है.

उसके अनगिनत नाम हैं और जितने नाम तुम्हारे कानों में सुनाई पड़ते हैं, सब उसी के तो नाम हैं. उसके सिवा यहाँ है कौन और, इसका नाम है,और कोई भी नाम नहीं है. जो शक्लें तुम देखते हो और जो शक्लें तुम्हारे ख्याल में आ सकती हैं, सब उसी की शक्लें है और उसकी कोई भी शक्ल नहीं है. उसमें ज़रा भी शुबाह और कमज़ोरी नाम को भी नहीं है. उसूल अपना काम करता हुआ चला जा रहा है और बराबर काम करता रहेगा. यह ही उसूल क़ानून का और मालिक का हुक्म है. हज़ार मज़हिमत (प्रयत्न) करो, मगर यह अपने ढंग पर काम करता ही रहेगा. यह मुखालफत (विरोध) की ज़रा भी परवाह नहीं करता और इसे जहाँ ज़िंदगी को ले जाना है वहां पहुंचा कर रहेगा. बच्चा बाप के दिमाग से निकलकर माँ के गर्भ में आता है, कुछ दिनों वहीँ परवरिश पाता है, फिर बाहर आता है. जबान होता है, बूढा होता है और फिर मर जाता है. यह तुम रोज़ देखते हो. दुनिया में जब अधर्म बढ़ जाता है माद्दा (भौतिकता) का ज़ोर होता है, बुराई बढ़ जाती है, भलाई दब जाती है और कमज़ोर पड़ जाती है. बुरे लोग खुशहाल और भले परेशान नज़र आते हैं- प्रकृति की ओर से एक शक्ति आती है

जो काँट-छांट करती हुई फिर तवाजुन (संतुलन) ठीक कर देती है. उस शक्ति को चाहे आप पैग़म्बर या अवतार या खुदा का बेटा, चाहे जो कहो. वह उन उसूलों को समझाता है जो इंसान के अक्ल के बाहर की बातें हैं ओर जहाँ इंसानी अक्ल की पहुँच नहीं है. इंसान कहाँ से आता है, मरने के बाद कहाँ चला जाता है. कौन क़ानून बनाता है, कौन उसको बनाता है ओर क़ायदे में रखता है, वह क़ानून क्या है, वगैराह- वगैराह? जब उस पर यक़ीन आ जाता है, यह ही विश्वास है ओर जब यह यक़ीन पुख्ता हो जाता है, और दिल से हम-आहंगी (ताल-मेल) अख्त्यार कर लेता है तो इसी को श्रद्धा कहते है .

ज़िन्दगी अपने कायभा पर काम करती हुई आ रही है. उसकी संभाल भी मालिक आप करता है. खाने के वक्त खाना और पीने के वक्त पानी खुद मिल जाता है. जहाँ ज़िंदगी वख्शी जायेगी वहां उस के ज़रूरी सामान क़ुदरत खुद मुहैया (उपलब्ध) कर देगी. यह तुम रोज़ ज़िंदगी के हर तबका (भाग या पक्ष) में देखते हो. यह देख लेना और सुन लेना और उस पर मज़बूती के साथ क़ायम रहना ही श्रद्धा है. जहाँ श्रद्धा और विश्वास में पुख्तगी आई, आप ही आप क़ानून के साथ मुआफक़त (सहयोग) और ताल- मेल आ जाता है और यह हालत हो जाती है कि चाहे ज़मीन और आसमान अपनी जगह से टल जाएँ, समुन्द्र पहाड़ पर लहराने लगे, सूरज और चाँद अपनी गर्दीश (चाल) छोड़ दें मगर ज़िंदगी कभी क़ानून का साथ नहीं छोड़ेगी. इस तरह क़ानून को समझना, उसके साथ ताल-मेल करना और फिर क़ानून पर हावी हो जाना और उसके दायरे से बाहर निकल जाना, इसी हालत का नाम मोक्ष, मुक्ति या निर्वाण पद में दाखिल होना है.

तस्लीम व रज़ा

मालिक पर विश्वास रख कर उसके आधीन रहना, यह ख्याल पुख्तगी के साथ रखना कि वह हमारा सच्चा बाप है, उसका हर काम हमारी भलाई के लिए है और वह सर्व-शक्तिमान है वह जो कुछ वह करता है, हमारी भलाई के लिए करता है और उसी में हमारी भलाई है और किसी में नहीं, यह समझ कर हर हालत में, चाहें वह हालत हमारी ख्वाइश के मुताबिक है या खिलाफ, खुश रहना तसलीम व रज़ा है. यह मालिक का क़ानून और उसूल है जो कभी गलती नहीं करता और जो नुक्श और ऐब से पाक (पवित्र) है. जिसको इतनी समझ आगयी फिर उसको परमार्थ में करना-धरना कुछ नहीं है. वह रोटियों को नहीं रोता और न दीन और दुनिया की कोई फ़िक्र उसको सताती है.

एक गरीब को लड़का पैदा हुआ. जब वह ज़रा बड़ा हुआ और माँ का दूध पीना छोड़ा, बाप रोने लगा कि लड़के को खाना कहाँ से आएगा. औरत सियानी थी, मुस्करायी और बोली - बच्चे को मेरे पेट में क्या तू ग़िज़ा (खुराक) देता था? जब वह पेट से निकलकर गोद में आया तो उसके लिए दूध क्या तू पैदा करता था? अब उसके दांत निकल आये हैं और उसने दूध पीना छोड़ दिया तो तुझे क्या परेशानी है? जो ताक़त अब तक ग़िज़ा मोहय्या (प्रदान) करती रही है वह अब भी ग़िज़ा मोहय्या करेगी. जब तूने पहले कुछ नहीं किया, तो अब क्या करेगा? विश्वास करो ईश्वर की दया पर. वह मुसब्बिउल असबाब (सब ज़रूरतों को पूरा करने वाला) है. झक मारेगा, अपने आप सारा इंतज़ाम करेगा. उसको आप फ़िक्र होगी. उसने बच्चे को पैदा किया है, वह जानता है कि बच्चे की परवरिश किस तरह होगी. तू क्यों नाहक दुखी होती है? जा अपना काम कर, और बात भी सच्ची थी .

जब दांत न थे तब दूध दियो!

जब दांत दिए तो का अन्न न देंहें !!

जल में थल में जो देत है सबको!

काम पड़े पर वह सुध लें हैं !!

जान को देत अनजान को देतु!

जहाँ को देत सो तोको देहें !!

काहे को सोच करें मन मूरख!

सोच किये कुछ काम न अईहें !!

जिसने बच्चे को पेट में दी ग़िज़ा!

गोद में पाला जिसने दूध पिला !!

वह जहाँ का है हाक़िम आला !

हर जगह है उसका बोलबाला !

दीन व दुनियां का वह खालिक है !!

वही राज़क और राणज़ाक़ है !

भूके को देता है नान जवीं!

नहीं उसमें है बुग्ज़ नफरत चौकीं !!

वोही है बेकसों का पुश्तों पनाह !

वेबसों की उसी की सिमत है राह !!

वही यतमों को पालने वाला !

वही बेबाओं का सच्चा रखवाला !

कारसाज़ व रहीम व दानिश वर !!

वह खुदा पाक जात है बरतर !

किस लिए फ़िकर से परेशान हैं !

जिसने पैदा किया वह पालेगा !!

आप गिरते को वह संभालेगा !

मर्द खामोश हुआ, काम काज में लगा. फ़िकर काफूर (दूर) हुई. मायूसी हट गयी और मालिक ने उसके काम में बरकत दी और वह घर खर्च आसानी से निकालने लगा.

प्रत्यक्ष देख रहे हो, फिर भी फ़िकर है. मुतफ़शीर (चिन्चित)और परेशान हो. क्यों नहीं सबर और रज़ा का तरीक़ा अख्त्यार करते?. मज़हब के लम्बे चौड़े व्याख्यान हर जगह होते हैं. मगर मालिक की जात पर कुछ भरोसा नहीं. इसलिए ज़रूरी है कि संतों के सत्संग में जाओ. जहाँ तुमको तसलीम व रज़ा की तालीम मिलेगी. तुममें विश्वास और श्रद्धा पैदा होगी और तुम सुखी होंगे. इस तरीके पर चलने से तुम अपाहिज और निकम्मे नहीं बन जाओगे, कानून आप तुमसे सब कुछ करा लेगा. वह गाफिल नहीं रहता.

राम सन्देश : जनवरी , १९५५

संत मत में वेदान्त के साधनों का समन्वय

वेदान्त में छै : साधन बताए हैं जिनके बिना परमार्थी के रास्ते पर नहीं चल सकता. ये हैं : (१) शम (२) दम (३) उपरति (४) तितिक्षा (५) श्रद्धा, और (६) समाधान. इसके बाद समर्पण होता है. ये सभी साधन लगभग सभी मतों में किसी न किसी रूप में प्रयोग में लाये जाते हैं. बिना इनके मन नहीं सधता.

शम- शम पहला साधन है. मन को किसी ऐसी चीज़ में लगा दो कि जहाँ पर वह ठहरे और उसको आनंद मिले. यानी उसको किसी बिंदु पर स्थिर कर दो. जब मन स्थिर हो जायेगा तो उसके साथ आत्मा भी ठहरेगी क्योंकि मन और आत्मा दोंनों एक साथ चल रहे हैं. आत्मा का जो अन्दर का आनंद है वह प्रकट होने लगेगा. मन को किसी चीज़ पर ठहराने से जो आनन्द मिलता है, वह मन का आनन्द नहीं है क्योंकि मन तो बेजान है. उसमें जो आनन्द है वह आत्मा का प्रतिविम्ब है क्योंकि आत्मा आनन्द स्वरूप है. मन को सब तरफ़ से हटाकर एक ही चीज़ के ध्यान में लगा देना होता है. अब इसके साथ- साथ यदि उसे किसी ऐसे महापुरुष के ध्यान में लगाओगे जिसका चरित्र भी पूर्णता को प्राप्त कर चुका है और जिसने ईश्वर की प्राप्ती कर ली है तो इससे तीन फ़ायदे अपने आप हो जाते हैं. मन अन्दर की तरफ़ यानी अन्तर्मुखी हो गया, चरित्र उच्च हो गया और ईश्वर का प्रेम मिलने लगा. इस वास्ते बतलाया गया है कि जो अन्दर focus (प्रतिविम्ब) रखो वह किसी ऐसी जीवित महान आत्मा या किसी महापुरुष का हो जिसने ईश्वर की प्राप्ती कर ली हो, उसका ध्यान बनाओ. यह शम है.

दम - जब मन ऊँचा उठने लगा तो जो इन्द्रियाँ विषयों में लगी हैं और जिनसे मन को ग़िज़ा मिलती है जिसके कारण वह इंद्रियों की तरफ़ भागता है, तो वह एक ही बिंदु पर स्थिर हो गया, और उसमें से जो शक्ति बाहर की तरफ़ जाती थी, वह रुक गयी और एक तरफ़ यानी अन्दर की तरफ़ को केन्द्रित हो गयी. इस तरह मन को बड़ी आसानी से इंद्रियों के विषयों से हटाया जा सकता है. यह 'दम ' है जिसका अर्थ है इंद्रियों का दमन करना. पहले-पहल इंद्रियों का दमन करने में बड़ी मुश्किल होती है क्योंकि मन इंद्रियों के द्वारा दुनिया की तरफ़ को भागता है. इंद्रियां बेजान हैं और उन्हें जो शक्ति मिलती है वह मन से मिलती है जो आत्मा पर सवार हैं. उदाहरण के तौर पर हम और आप बैठे हुए हैं, बातचीत कर रहे हैँ, और बाहर लड़के शोर कर रहे हैं लेकिन हमैँ सुनाई नहीं देता. कान, यानी सुनने की इंद्रिय तो मौज़ूद है, फिर शोर सुनाई क्यों नहीं देता. विषय की तरफ़, जो उसके सुनने का कार्य है, वो क्यों नहीं जाती? इसका कारण यह है कि मन की शक्ति बजाय कानों के तरफ़ के, अन्दर की तरफ़ को है, आपका ध्यान यहाँ (सत्संग में) लग रहा है. ऐसे ही आँखों का है. आप किसी के सोच-

विचार में पड़े हुए हैं, आँखें खुली हुई हैं, कोई चीज़ सामने से गुज़र गई और वह दिखाई नहीं देती, तो आंखें तो प्रकाश नहीं है. आँख में तो जब फ़ोकस पड़ता है किसी चीज़ का तो वह चीज तब दिखाई देतीं है जब अन्दर और बाहर की लाइट एक हो जाती है. अन्दर से बाहर लाइट आती हैं और वह बाहर के प्रतिविम्ब को अन्दर ले जाती है. इस प्रकार जब दोंनों लाइटें मिल जाती हैं तब किसी चीज़ का अनुभव होता है. अन्दर लाइट है, लेकिन सूरज छुपा हुआ है तो क्या दिखायी देगा? सूरज निकला हुआ है और ख़्याल दूसरी तरफ़ है तो भी दिखायी नहीं देग . ख़्याल भी बाहर की तरफ़ है और सूरज भी चमक रहा है यानी रोशनी हो रहीं है तब दिखाई देगा. ऐसा ही सभी इंद्रियों का हाल है.

उपरति और तितिक्षा - विषयों से मन और इन्द्रियाँ हटकर इस तरह अपने अन्दर सिमिट जाती हैं जिस तरह कछुआ अपने हाथ -पाँव समेट लेता है. कछुए का स्वभाव होता है कि जब कोई बाहर से छेड़ता है तो वह अपने हाथ-पावँ और सिर को अन्दर की तरफ़ सिकोड़ लेता है. फिर उसको कोई ख़तरा नहीं रहता. हमारा मन कछुए की तरह है जो इंद्रिय रूपी हाथ पांवों से बाहर को जा रहा था. उसको बाहर से हटाकर अन्दर में ले आयें तो अब वह बेफिक्र हो गया अब बाहर से उसके ऊपर कोई आपत्ति नहीं है, अन्दर अपने ध्यान में लगा हुआ है. इंद्रियां जो उसको बाहर की ओर खींच रहीं थीं, उनका दमन हो गया, अब मन में शांति आ गयी. अब तुम्हारे अन्तर में जो आनंद हो रहा है, मन पर रोक लगने से उसकी झलक मिलने लगी. उसे प्राप्त करके ऐसा लगने लगा कि बाहर संसार की चीज़ों में, भोगों में, जो आनंद है वह तो भीतर के आनंद का हज़ारवां हिस्सा भी नहीं है. इस वास्ते हम बाहरी चीज़ों को क्यों देखें? हम यहीं चाहेंगे कि आँखें बंद करके उस भीतर के आनंद को ही देखते रहें. इस तरह मन दुनिया से उपराम हो जाता है. अब उसको अन्दर से आनंद आने लगा तो दुनिया की चीज़ों से उसका वास्ता नहीं रहा. अब गरमी-सर्दी, इज़्ज़त-बेइज़्ज़ती और बाहर के अच्छे बुरे प्रभावों की उसके लिए कोई कठिनाई रही ही नहीं. अगर उसकी साधना के रास्ते में कोई बाहरी कठिनाई आती है तो अन्दर का आनंद उसको हटा देता है. गुरु का काम कर रहे हैं, आनंद आ रहा है. अचानक किसी बच्चे ने आकर छेड़ दिया या परेशान करने लगा. भले ही हम उसको प्यार करते हों तो भी हम उसको हटा देते हैं. हर किस्म की कठिनाई जो उस सार वस्तु को हाँसिल करने में जिसके लिए हम यत्न कर रहे हैं, रुकावट डालती है, उसको हटा देते हैं. गरमी, सर्दी, इज़्ज़त, बेइज़्जती, दुनियाँ का माल, दुनियाँ की मुश्किलात या और भी जितनी रुकावटें, जितने द्वन्द हैं उन सब को अपने प्रियतम की राह से हटा देना 'तितिक्षा ' है.

श्रद्धा - जब तक दुनियाँ की क़दर है तभी तक आपको कठिनाई मालुम देती है गुरु के पास जाने में. अभी एक बहन हमसे कह रहीं थीं कि हम आना तो चाहते हैं लेकिन रुपया हमारे पास नहीं है. रुपया तो है, मगर दुनियाँ की क़दर ज़्यादा है. इस वास्ते रुपये इस तरफ़ ख़र्च नहीं कर सकते और जब दुनियाँ से उपराम हो गये और गुरु के सत्संग को हमने मुख्य समझ लिया तो चाहें जिस तरह भी हो राह ख़र्च के लिए रुपया बचा कर वहाँ जाएँगे और हर रुकावट को पार करेंगे. अगर पैसा नहीँ है और पैरों चलकर, इतनी तक़लीफ़ उठाकर जाता हैं, तो वह कितना शौक़, कितनी श्रद्धा लेकर जाता है. उतना ही उसका फल (फ़ायदा) पाता है क्योंकि शौक़ चीज़ पर निर्भर नहीं करता, बल्कि मन की हालत पर निर्भर करता है. मन में श्रद्धा नहीं है, उत्साह नहीं हैं, आप किसी फ़क़ीर के पास जा रहे हैं, चाव है नहीं. वहाँ पर जाकर बैठेंगे तो क्या ख़ाक अनुभव होगा? दूसरा बड़े उत्साह से जाता है, शौक़ और श्रद्धा लेकर जाता है, वह समझता है कि मैं किसी महापुरुष के पास जा रहे हूँ तो वहाँ जाकर उसको बड़ा आनंद मिलता है. तो यह फ़र्क़ क्यों हो गया ? तुम्हारे मन का फ़र्क़ है. उस महापुरुष में कुछ कमाल है या नहीं मगर पहली बाधा तो तुम्हारा मन है. अगर मन में श्रद्धा और उत्साह है तो तुम कुछ न कुछ आनंद ज़रूर महसूस करोगे और अगर उत्साह बिलकुल नहीं है तो चाहें फ़क़ीर की सोहबत में कितना भी आनंद हो, तुम्हें कुछ भी महसूस नहीं होगा . यह श्रद्धा हैं.

समाधान और समर्पण - जब मन शुद्ध हो गया, इन्द्रियाँ शुद्ध हो गईं और उन्होंने विषयों की तरफ़ भागना बंद कर दिया, मन में किसी चीज़ की इच्छा नहीं है, तो अब ऐसी हालत पैदा हो गई कि अपनी शंकाओं का समाधान करो. जो तुम्हारे संशय हैँ, ईश्वर के मुताल्लिक़, मज़हब के मुताल्लिक़, उनको दूर करो और किसी ऐसे महापुरुष के सामने, जिसने पारब्रह्म का ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, शास्त्रों का ज्ञाता हो, तुम्हारा और सारे जगत का हितैषी, उसके पास जाओ और बड़े अदब से बैठो. बेअदबी से कुछ हाँसिल नहीं कर सकते. जब तुम्हारी सब शंकाओं का समाधान हो जाये तब स्वयँ को पूरी तरह से उनके समर्पण कर दो. तन, मन, धन सब कुछ उन पर न्योछावर कर दो और अपनी आप को पूरी तरह उनमैं लय कर दो. जीवन के लक्ष्य की प्राप्ती हो जायेगी.

ईश्वर आप सबको समर्पण और गुरु में लय होने की शक्ति प्रदान करें .

राम संदेश : जुलाई १९७९